पत्रांक .... दिनांक ....

HISTORY, Paper – II, B.A. Hons. Part I

Rise of Modern West

Poonam Choudhury
Chief Coordinator
History, N.O.U.

Q) धर्मसुधार आन्दोलन के कारणों की विवेचना करें।

Ans.) * वैज्ञानिक प्रगति – पुनर्जागरण से चौदहवीं – पंद्रहवीं शताब्दी में जगत और ईश्वर संबंधी वैज्ञानिक यूनानी विचारों का प्रादुर्भाव हुआ जिसने चर्च की मान्यताओं को धूमिल किया। उदाहरणार्थ पूर्व काल में टालमी का यह विचार मान्य था कि पृथ्वी सौरमंडल का केन्द्र है। यह विश्वास इतना गहरा था कि जब ब्रूनो ने इसका विरोध किया तब उसे जिन्दा जला दिया गया। जब कापरनिकस ने यह सिद्ध कर दिया कि पृथ्वी सूर्य के चारों ओर घूमती है, तो धर्माचार्यों ने उसे अपने निष्कर्ष वापिस लेने को कहा। ऐसे ही समय विचारकों ने धार्मिक विश्वास के विपरीत यह प्रतिपादित किया कि मनुष्य स्वयं अपने भाग्य का निर्माता हो सकता है। मैरिनर्स कम्पास की खोज से यूरोप के लोगों का विभिन्न गैर-ईसाई संस्कृतियों से संबंध स्थापित हुए। परिणाम स्वरूप ईसाई धर्माडम्बर का पर्दाफाश हुआ।

* शिक्षा का प्रसार – पंद्रहवीं शताब्दी के पूर्व तक यूरोपीय शिक्षा केंद्रों में केवल धार्मिक शिक्षा दी जाती थी। किन्तु पुनर्जागरण के परिणामस्वरूप इटली और यूरोप के शेष भागों में धर्म निरपेक्ष विषयों का अध्ययन किया जाने लगा। धर्म निरपेक्ष शिक्षा के प्रसार से व्यक्ति ईसाई धर्म की कुरीतियों को समझने लगा। यूरोप में शिक्षा के इस प्रसार में छापेखाने के प्रवेश ने बहुत योगदान दिया। 50 वर्षों के थोड़े समय में ही यूरोप में लगभग दस लाख पुस्तकें तैयार हो चुकी थी। पुस्तकों के प्रसार से ज्ञान और नवीन विचारों का प्रसार संभव हुआ। बाइबिल का अनेक देशों की भाषाओं में अनुवाद होने से सामान्य जन भी ईसाई धर्म के मूल को समझने लगे। कई यूरोपीय राज्यों – जर्मनी, फ्रांस और इंग्लैंड में नये-नये विश्वविद्यालयों की स्थापना हुई; जो

Scanned with CamScanner

दिनांक ....

Page 2

कालांतर में धर्मसुधार आंदोलन के अधिकांश नेताओं की गतिविधियों के केन्द्र बने।

*आर्थिक परिवर्तन — मध्ययुगीन यूरोप में आर्थिक-व्यवस्था कृषि प्रधान थी। सामंतीय ढाँचे में कृषक को किसी प्रकार की स्वतंत्रता नहीं थी क्योंकि वह सामंत की इच्छा पर निर्भर था। कृषि के अतिरिक्त उद्योग भी श्रेणी-व्यवस्था में बंधे होने के कारण शिल्पी एवं कारीगर व्यक्तिगत स्वतंत्रता से परे थे, परंतु सोलहवीं शताब्दी में बड़े शक्तिशाली राज्यों की स्थापना से शनैः शनैः सामंतवादी व्यवस्था टूटने लगी। इससे एक ओर कृषकों को स्वतंत्रता प्राप्त हुई तो दूसरी ओर औद्योगिक क्षेत्र में पूँजी के अभाव और श्रेणियों में कमजोर होने के कारण कारीगरों को भी स्वतंत्रता मिली। लगभग इस समय ऐसे वर्ग का उदय हुआ जो पूँजी लगाकर इन स्वतंत्र हुए कृषकों एवं मजदूरों से अपनी शर्तों पर उत्पादन कराने के लिए तत्पर था। इस व्यवस्था के जन्म ने अधिक उत्पादन तथा अधिक उत्पादन ने व्यापारिक प्रगति का मार्ग प्रशस्त किया। व्यापार और उद्योग की उन्नति से समाज में एक ऐसे वर्ग का उदय हुआ जो धनी था। यह वर्ग धन के प्रयोग से ऐश्वर्यपूर्ण जीवन व्यतीत करना चाहते थे। यद्यपि यह ईसाई धर्म की परंपरा के प्रतिकूल था। इसके अतिरिक्त, ईसाई धर्म में ब्याज और मुनाफा कमाने का भी निषेध था। इन कारणों से इस वर्ग ने धर्म सुधारों को प्रोत्साहित किया। राजा ने जब धर्म-निरपेक्ष मामलों में पोप के हस्तक्षेप को अनुचित बताकर संघर्ष किया तो व्यापारी वर्ग ने राजा को सहयोग दिया। इस वर्ग की निगाहें चर्च की अथाह सम्पत्ति और धन पर लगी हुई थी। इस प्रकार आधुनिक युग के आरंभ में हुए आर्थिक परिवर्तनों ने कैथोलिक चर्च को कमजोर बनाने में यथेष्ट योगदान दिया।

क्रमांक .... दिनांक ....

Page 3

* चर्च संगठन के दोष — मध्यकाल से चर्च का सम्पूर्ण संगठन पूर्णतः दूषित हो चुका था। वह अपने वास्तविक उद्देश्य को भूला चुका था। शासन एवं समाज के प्रत्येक क्षेत्र पर अंकुश लगाकर चर्च ने काफी शक्ति अर्जित कर ली थी। चर्च एक राजतंत्र की भाँति कार्य करता था, जिसमें पोप की सत्ता सर्वोच्च था और समझा जाता था कि 'पोप इज इनफालिबल'।

* बाइबिल में उल्लेख है, 'ऊँट का सूई के छेद से निकलना आसान है, पर किसी धनिक का स्वर्ग पहुँचना मुश्किल है', परन्तु उसी बाइबिल के सर्वोच्च व्याख्याता भव्य राजप्रासादों में वैभव के साथ रहते थे। उनके व्यक्तिगत जीवन में सभी तरह के अनाचार का प्रवेश हो गया था। एलेक्जेण्डर षष्ठम (1492–1503) न केवल चरित्र भ्रष्ट था बल्कि निर्लज्ज होकर अपनी नाजायज संतानों को जीवन में आगे बढ़ाने के लिए हर तरह से प्रयत्न करता था। उसका उत्तराधिकारी जूलियस द्वितीय (1503–1513) केवल सैनिक कार्यों में दिलचस्पी लेता था। पोप लिओ दशम (1513–1521) प्रतिमाह 6000 ड्यूकेट ऐश में खर्च करता था। वह धन के लिए जघन्य से जघन्य कार्य करने से भी नहीं हिचकता था। उसने धन एकत्र करने के लिए गिरजाघरों के निर्माण तक का बहाना बनाया।

उसके न्यायालय में हर बुरे कार्य के दण्ड से बचने के लिए फीस ली जाती थी। यह स्थिति थी उनकी जो समाज के लिए सर्वोच्च आदर्श थे। भ्रष्टाचार सारे चर्च में व्याप्त था। चर्च का कोई भी पद बिक सकता था। सारा तंत्र विलासिता का शिकार था। इससे बड़ा मजाक क्या होगा कि अब छुपकर नहीं, खुले आम नियम व अनुशासन का उल्लंघन होता था और कोई जुबान तक नहीं हिला सकता था।

चर्च में फैले भ्रष्टाचार का सीधा संबन्ध शोषण से था। हर व्यक्ति को अपनी आय का दशमांश चर्च को देना पड़ता था। चर्च को चढ़ावा देना पड़ता था।

Scanned with CamScanner

चर्च के बढ़ते खर्चों की पूर्ति के लिए कर बढ़ने लगे जि
कर के अतिरिक्त भेंट उपहार के रूप में चर्च को चढ़वा
देना पड़ता था। कर एवं उपहार देने की प्रथा अन्ततः
जनता पर बोझ बन गयी। इस बात पर क्षोभ था कि
धन विदेश (रोम) चला जाता था। चर्च द्वारा हो रहे
आर्थिक शोषण से राजा और धनी दोनों ही क्षुब्ध
थे। विभिन्न क्षेत्रों में बढ़ती हुई राष्ट्रीयता के कारण शासक
वर्ग चर्च द्वारा वसूले गये धन को अपने हिस्से की चोरी
समझता था। धनिक लोगों को एतराज था कि चर्च
का धन अनुत्पादक है। पूँजीवादी व्यवस्था की शुरु-
आत हो चुकी थी और वह धन बेकार समझा जाने
लगा था जो पूँजी बनाकर उत्पादन में न लगे। इस प्रकार
जनता, व्यापारी, शासक आदि सभी चर्च के विरोधी
थे।

* राजनीतिक कारण — पोप का राजनीतिक प्रभाव एवं
राजाओं द्वारा पोप के प्रभाव से स्वतंत्र होने की आकांक्षा
भी धर्म सुधार आन्दोलन का कारण बनी। मध्य युग
में पोप को व्यापक राजनीतिक अधिकार प्राप्त थे, जैसे
रोमन कैथोलिक चर्च को मानने वाले राज्यों में आंतरिक
एवं बाह्य हस्तक्षेप, राजा को धर्म से बहिष्कृत करने का
अधिकार, राज्यों में चर्च के अधिकारियों की नियुक्ति
किसी राज्य की जनता को राज्य के विरुद्ध करने का आदेश
देना आदि। किन्तु सोलहवीं सदी के आरंभ में स्थिति
बहुत बदल चुकी थी। राजाओं ने सामंतों का दमन कर
निरंकुश राजसत्ता की स्थापना कर ली थी। यूरोप
के बड़े भागों में राष्ट्रीय राज्यों की स्थापना हो चुकी
थी। इस सबसे राजाओं की स्थिति मजबूत हो चुकी
थी। ऐसी स्थिति में पोप का हस्तक्षेप शासक कैसे स्वीकार करते।

प्रत्येक शासक विधानों, न्यायालयों और करारोपण को राष्ट्रीय आधार पर स्थापित कर रहा था, किन्तु पोप चर्च के विधानों अदालतों का प्रशासन और चर्च के करों का संग्रह अन्तराष्ट्रीय आधार पर करता था, जिसे शासक अपने अधिकारों के विरुद्ध समझते थे। वे चाहते थे कि चर्च के अधिकारियों समेत सभी अभियुक्तों पर राष्ट्रीय न्यायालयों में मुकदमें चलायें जायें। शासन अपनी पूर्ण सत्ता चाहते थे, इसलिए पोप के प्रति उनके मन में कटुता थी।

* तात्कालिक कारण – चर्च के व्यय अत्यधिक होने के कारण चर्च ~~ने~~ न वैध व अवैध उचित तथा अनुचित उपायों एवं साधनों द्वारा धन वसूल करना आरंभ कर दिया। धर्म सुधार आंदोलन का तात्कालिक कारण था – पोप के अधिकृत पदाधिकारी टेटजेल द्वारा जर्मनी में 'पोप - मोचन पत्रों' अथवा 'अनुग्रह - पत्रों' को खुले आम बेचने लगा तो मार्टिन लूथर ने अपने प्रसिद्ध 95 प्रसंगों द्वारा इसका डटकर विरोध किया और पोप के विरुद्ध विद्रोह का झण्डा खड़ा किया। लूथर ने इस तथ्य पर जोर दिया कि धन लेकर मोक्ष प्राप्त नहीं किया जा सकता है अपितु पापों से मुक्ति के लिए ईश्वर की असीम दया की आवश्यकता है। उसने 'श्रद्धा द्वारा दोष मुक्ति' का सिद्धांत का प्रतिपादित किया। उसका विश्वास था कि यदि मनुष्य अपने पापों के लिए खेद प्रकट करता है और ईश्वर में विश्वास रखता है तो वह पाप - मोचन पत्रों के बिना भी क्षमा कर देगा।

— X —

Scanned with CamScanner